

SHRI VALLABHBHAI VASRAMBHAI MARVANIYA

Shri Vallabhbhai Vasrambhai Marvaniya is a well known farmer of the country. Shri Marvaniya was the first to introduce carrots to the palate of Gujarati's, because until 1943 locals did not consider carrots suitable for human consumption.

2. Born on 1st January, 1922, Shri Marvaniya studied up to 5th class. He decided to develop the local variety of carrots for human consumption as it fetched good price in the market. It was a raging success in as much as that the Nawab of Junagadh, Muhammad Mahabat Khan-III, became his regular customer. After the partition of India and Pakistan, the Nawab left Junagadh and Shri Marvaniya started becoming dependent on the market.

3. Shri Marvaniya has two sons, Gokulbhai and Arvindbhai who help him in farming as well as carrot seeds production and marketing. His whole family including his grandchildren help in various activities of carrot farming and marketing. He planted the carrots seeds all over his farms. There were lakhs of honey-bees visiting the farms, so Shri Marvaniya named the variety 'Madhuvan'.

4. As per the Anand Agricultural University's 2017 test report, Madhuvan variety of carrot has 277.75 mg beta-carotene per kg as against the normal 70-80 mg per kilogram. Initially, Shri Marvaniya would grow carrot for his own family but slowly the demand forced him to do it for the villagers as well. Same thing happened with the carrot seeds.

5. Shri Marvaniya has been conferred several prestigious awards which includes “Sristi Samman” Award in 2015 and “National Innovation Foundation” Award in 2017.

पद्म श्री



श्री वल्लभभाई वसरामभाई मारवणीया



श्री वल्लभभाई वसरामभाई मारवणीया देश के जाने-माने किसान हैं। आपने ही गुजरात की जनता को गाजर के स्वाद से परिचय कराया; क्योंकि सन् 1943 तक यहां की स्थानीय जनता गाजर को मनुष्य के उपभोग के लिए उपयुक्त नहीं मानती थी।

2. आपका जन्म 1 जनवरी, 1922 को हुआ और आपने कक्षा 5 तक शिक्षा ग्रहण की है। आपने गाजरों की स्थानीय किस्म को मनुष्य के उपभोग के लिए विकसित करने का निर्णय लिया क्योंकि इसका बाजार में अच्छा मूल्य मिला। यह इतनी बड़ी सफलता सिद्ध हुई कि जूनागढ़ के नवाब मुहम्मद महाबत खान-III आपके नियमित ग्राहक बन गए। भारत और पाकिस्तान के विभाजन के पश्चात्, नवाब जूनागढ़ छोड़कर चले गए और इस प्रकार आप बाजार पर निर्भर रहने लगे।

3. आपके गोकुलभाई और अरविंदभाई नामक दो पुत्र हैं जो खेती के साथ-साथ गाजर के बीजों के उत्पादन और विपणन में आपकी सहायता करते हैं।आपके पौत्र-पौत्रियों सहित आपका पूरा परिवार गाजर की खेती और विपणन की विभिन्न गतिविधियों में सहायता करता है। आपने अपने पूरी खेती में गाजर के बीज बो दिये और तत्पश्चात् लाखों मुधुमक्खियां खेतों में मंडराने लगीं, इसलिए, आपने इस किस्म को 'मधुवन' नाम दिया।

4. आनंद कृषि विश्वविद्यालय की 2017की परीक्षण रिपोर्ट के अनुसार,'मधुवन' किस्म की गाजर में सामान्य किस्म की गाजर जिसमें प्रति किलोग्राम 70-80 मि.ग्रा. बीटा-कैरोटीन होता है, की तुलना में 277.75 मि. ग्रा. बीटा कैरोटीन पाया जाता है। आरंभ में, आपने केवल अपने परिवार के लिए गाजर का उत्पादन किया किंतु धीरे-धीरे मांग बढ़ने के कारण आपने गांववासियों के लिए भी उत्पादन आरंभ कर दिया। यही करिश्मा गाजर के बीजों के संबंध में भी हुआ।

5. आपको अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाजा गया है जिनमें वर्ष 2015 में दिया गया "श्रृष्टि सम्मान" पुरस्कार और 2017 में प्रदान किया गया "नेशनल इनॉवेशन फाउंडेशन" पुरस्कार शामिल हैं।